भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष-1 /अंक -3/ सितम्बर-2021

॥ श्री ॥
॥ विघ्नहर्ता ॥

www.bhartiyaparampara.com

भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष-1 /अंक-3 / सितम्बर-2021

For Private Circulation Only

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

संपादक
प्रीति माहेश्वरी

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

मूल्य
आपका कीमती समय

सम्पर्क सूत्र
www.bhartiyaparampara.com
paramparabhartiya@gmail.com

सोशल कनेक्शन

हमसे जुडने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

सितम्बर माह

Saka Calendar- 1943 Vikram Samvat- 2078 Ayan- Daksinayan Ritu- Sharad

01	बुधवार, भाद्रपद, कृष्ण नवमी
02	गुरुवार, भाद्रपद, कृष्ण दशमी
03	शुक्रवार, अजा/जया एकादशी व्रत भाद्रपद, कृष्ण एकादशी
04	शनिवार, प्रदोष व्रत, पर्युषण पर्व प्रारंभ, बछ बारस, भाद्रपद, कृष्ण द्वादशी
05	रविवार, मासिक शिवरात्री, शिक्षक दिवस भाद्रपद, कृष्ण त्रयोदशी
06	सोमवार, पोळा-पिठोरा पर्व भाद्रपद, कृष्ण चतुर्दशी
07	मंगलवार, भाद्रपद, कृष्ण अमावस्या
08	बुधवार, भाद्रपद, शुक्ल प्रतिपदा व द्वितीया
09	गुरूवार, हरतालिका तीज व्रत भाद्रपद, शुक्ल तृतीया
10	शुक्रवार, गणेश चर्तुथी उत्सव, डांडिया चौथ, भाद्रपद, शुक्ल चर्तुथी
11	शनिवार, ऋषी पंचमी, माहेश्वरी राखी, पर्युषण पर्व समाप्त,भाद्रपद, शुक्ल पंचमी
12	रविवार, स्कंध षष्ठी भाद्रपद, शुक्ल षष्ठी
13	सोमवार, संतान सप्तमी व्रत भाद्रपद, शुक्ल सप्तमी
14	मंगलवार, राधा अष्टमी, हिन्दी दिवस भाद्रपद, शुक्ल अष्टमी
15	बुधवार, श्री चन्द्र नवमी भाद्रपद, शुक्ल नवमी
16	गुरुवार, तेजा दशमी पर्व भाद्रपद, शुक्ल दशमी
17	शुक्रवार,जलझूलनी/परिर्वतनी एकादशी, विश्वकर्मा पूजा, भाद्रपद, शुक्ल एकादशी
18	शनिवार, वामन जंयती, प्रदोष व्रत भाद्रपद, शुक्ल द्वादशी
19	रविवार, अनंत चतुर्दशी, गणेश विर्सजन भाद्रपद, शुक्ल चतुर्दशी
20	सोमवार, पूर्णिमा व्रत भाद्रपद, शुक्ल पूर्णिमा
21	मंगलवार, पितृपक्ष/श्राद्ध पक्ष प्रारंभ अश्विन, कृष्ण प्रतिपदा
22	बुधवार, द्वितीय श्राद्ध अश्विन, कृष्ण द्वितीया
23	गुरुवार, भरणी श्राद्ध अश्विन, कृष्ण द्वितीया
24	शुक्रवार, तृतीय श्राद्ध अश्विन, कृष्ण तृतीया
25	शनिवार, चर्तुथ श्राद्ध अश्विन, कृष्ण चर्तुथी
26	रविवार, पंचम श्राद्ध अश्विन, कृष्ण पंचमी
27	सोमवार, षष्ठ श्राद्ध अश्विन, कृष्ण षष्ठी
28	मंगलवार, सप्त श्राद्ध अश्विन, कृष्ण सप्तमी
29	बुधवार, अष्ट श्राद्ध अश्विन, कृष्ण अष्टमी
30	गुरुवार, नव श्राद्ध अश्विन, कृष्ण नवमी

संसार के सबसे प्राचीन धर्म मे से एक जैन धर्म भी है जिसको **"श्रमणों का धर्म"** भी कहते है। **जैन धर्म के प्रथम संस्थापक ऋषभ देव जी** है, जो भारत के चक्रवर्ती सम्राट भरत के पिता थे। जैन धर्म में अब तक कुल 24 तीर्थंकर हुए हैं। जैन संस्कृति में जितने भी पर्व मनाए जाते हैं, उन सब मे कठोर तप एवं साधना का निवेश होता है।

पर्युषण पर्व जैन समाज का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पर्व है। जिसका मुख्य उद्देश्य आत्मा की शुद्धि और धर्म की आराधना करना है। इसका शाब्दिक अर्थ - **परि+उषण** है, **परि** यानी चारों तरफ से और **उष्ण** का मतलब बुरे कर्मो / विचारों का नाश करना है।

यह पर्व भाद्रपद कृष्ण की द्वादशी से प्रारम्भ हो कर भाद्रपद शुक्ल पंचमी को पूर्ण होता है। **श्वेतांबर और दिगंबर** दोनो ही समाज के लोग पर्युषण पर्व मनाते हैं। श्वेतांबर के पर्युषण समाप्त होने के बाद दिगंबर समाज के पर्युषण प्रारंभ होते हैं। श्वेतांबर समाज आठ दिन तक इस पर्व को मनाता हैं जिसे **"अष्टान्हिका"** कहा जाता हैं जबकि दिगंबर समाज के अनुयायी दस दिनों तक पर्युषण पर्व को मनाते हैं जिसे **"दशलक्षण"** कहा जाता हैं।

यह पर्व लगातार दस दिनों तक चलता हैं, जैन धर्म के अनुयायी उत्तम क्षमा, उत्तम मार्दव, उत्तम आर्जव, उत्तम शौच, उत्तम सत्य, उत्तम संयम, उत्तम तप, उत्तम त्याग, उत्तम आकिंचन्य, उत्तम ब्रह्मचर्य के द्वारा आत्म साधना करते हैं।

इसे **"आत्मशोधन"** का पर्व भी कहा गया है, इस पर्व की मुख्य बातें जैन धर्म के पांच सिद्धांतों पर आधारित हैं जैसे कि -

1. **अहिंसा** - यानी कि किसी को भी कष्ट ना पहुंचे
2. **सत्य** - यानी हमेशा सच बोलना
3. **अस्तेय** - यानी कि चोरी ना करना
4. **ब्रह्मचर्य** - यानी कि भोग विलास से दूर रहना
5. **अपरिग्रह** - यानी कि जरूरत से अधिक धन एकत्रित ना करना

पर्युषण, जैन अनुयायियों के आध्यात्मिक पर्वों में अग्रण्य और जैन एकता का प्रतीक पर्व है। मानव की सोई हुई अन्त: चेतना को जागृत करने, आध्यात्मिक ज्ञान के प्रचार, सामाजिक सदभावना एवं सर्वधर्म समभाव के कथन को बल प्रदान करने के लिए पर्युषण पर्व मनाया जाता है। पर्युषण का आमतौर पर यह अर्थ होता है कि मन के सभी विकारों का खात्मा करना। यानी कि मन में उठने वाले सभी प्रकार के बुरे विचार को इस पर्व के दौरान खत्म करने का व्रत ही पर्युषण महापर्व हैं। वह इन विकारों पर जीत हासिल कर शांति और पवित्रता के मार्ग की ओर खुद को ले जाना होता हैं।

पर्युषण पर्व के अन्तिम दिन संवत्सरी जिसे **"विश्व-मैत्री दिवस"** भी कहा जाता है। संवत्सरी पर्व पर्युषण में सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है। इस दिन सांवत्सरिक प्रतिक्रमण किया जाता है जिसमे पुरे साल भर में किए गए पापों का प्रायश्चित करते हैं। सांवत्सरिक प्रतिक्रमण के बीच में ही सभी ८४ लाख जीव योनी से क्षमा याचना की जाती है। यहाँ क्षमा याचना सभी जीवों से वैर भाव मिटा कर मैत्री करने के लिए होती है। क्षमा याचना शुद्ध हृदय से करनी चाहिये है तथा दूसरों को क्षमादान देना सबसे अहम् भाग होता है।

पर्व के अंतिम दिन दिगंबर **'उत्तम क्षमा'** तो श्वेतांबर **'मिच्छामि दुक्कडम'** कहते हुए सभी से क्षमा माँगते हैं। जैन धर्म मे **'मिच्छामी'** का अर्थ क्षमा करना और **दुक्कडम** का अर्थ गलतियों से है अर्थात मेरे द्वारा जाने-अनजाने में की गयी गलतियों के लिए मुझे क्षमा करना होता है।

भगवान महावीर स्वामी जी पंक्ति याद आती है - **'खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्तिमे सव्व भुएस् वैरं ममझं न केणई।'** - अर्थात सभी प्राणियों के साथ मेरी मित्रता है, किसी के साथ मेरी दुश्मनी नहीं है। क्षमा माँगने से ज्यादा जरूरी क्षमा करना होता है।

यह वाक्य साधारण सा लगता है, मगर इसका अर्थ बहुत विशेष है।

भारतीय परम्परा

की मासिक ई-पत्रिका

नियमित प्राप्त करने हेतु हमें सम्पर्क करें!

- व्हाट्सप्प और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरू में नया अंक प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें।

- ई-पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुवे है उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुँच सकते है।

- ई-पत्रिका में कुछ त्रुटियाँ हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें।

- **भारतीय परंपराओं** को संजोये रखने एवं ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों और विचारों से अवगत जरूर कराये।

बछ बारस का त्यौहार, व्रत कथा और महत्व

भादवा महीने में कृष्ण पक्ष की बारस (द्वादशी) को बछ बारस के रूप में मनाया जाता है। जिसे **वत्स द्वादशी** भी कहते है। यह त्यौहार राजस्थान में ज्यादा प्रचलित है। इस दिन महिलाएं बछ बारस का व्रत रखती है। यह व्रत सुहागन महिलाएं पुत्र प्राप्ति और पुत्र की मंगल कामना के लिए तथा परिवार की खुशहाली के लिए करती है। इस दिन गाय और बछड़े की पूजा की जाती है। यह पूजा गोधुली बेला में की जाती है।

इस दिन गाय का दूध और दूध से बने पदार्थ जैसे दही, मक्खन, घी आदि का उपयोग नहीं किया जाता। इसके अलावा गेहूँ तथा उससे बनी चीजें भी नहीं खाना चाहिए। इस दिन चाकू से कटी हुई वस्तु का इस्तेमाल नहीं किया जाता है। घर में मोठ, चने, मूंग आदि को भिगोया जाता है और इस अंकुरित अनाज से पूजा की जाती है। गाय और बछड़े की पूजा के बाद कहानी सुनी जाती है और बायना निकाला जाता है। भोजन में बेसन से बने आहार जैसे कढ़ी, पकोड़ी, भजिये आदि तथा मक्के, बाजरे, ज्वार आदि की रोटी तथा बेसन से बनी मिठाई का उपयोग किया जाता है। इस दिन घरों में विशेष कर बाजरे की रोटी जिसे **सोगरा** भी कहा जाता है बनाते है और अंकुरित अनाज की सब्जी बनाई जाती है।

बछ बारस व्रत कथा सुनने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें

शिक्षक दिवस

भारत अनेको परंपराओं से फला फूला देश है। यहाँ की संस्कृति में संस्कारों की महक है और वहीं खुशबु हमें हमारी संस्कृति से जोड़ते हुए सफलता की चोटी तक पहुँचाती है। वैसे तो विश्व में अनेक देशों में अलग.अलग दिन यह दिवस मनाया जाता है। परंतु भारत में यहाँ के **भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन** के जन्मदिन पाँच सितंबर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन सभी छोटे बड़े अपने अपने ज़िंदगी में शिक्षक बन के आए हुए व्यक्तियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। हर एक इंसान के जीवन में शिक्षक के साथ साथ बहुत से ऐसे व्यक्ति होते हैं जिनको वह अपना शिक्षक मान सकते हैं व मानते भी हैं। जैसे माता पिता, बंधु जन, मित्रगण, कुछ ऐसे अनजान लोग जो हमारे प्रेरणा स्थान बन जाते हैं, जो हमें समय समय पर प्रोत्साहित करके आगे बढ़ने की राह दिखाते हैं। उन सभी को हम शिक्षक दिवस के दिन अनायास ही याद कर लेते हैं और मन ही मन आभार प्रकट करके धन्यवाद भी देते हैं।

परंतु कुछ ऐसे लोग होते हैं जो अपनी ज़िंदगी में एक शिक्षक की कमी को महसूस करते हैं। **क्या हम अपने आपको अपना शिक्षक नहीं बना सकते हैं?** इंसान ख़ुद एक ऐसा व्यक्ति होता है जो स्वयं की कमियों, दोषों और गुणों को पूर्णतः जानता है। अपनी शक्ति एवं अच्छाइयों को अच्छे से पहचानता हैं। दोषों को छुपाने के बजाए, हम चाहें तो उनको कम करके अपनी अच्छाइयों को निखार सकते हैं। अपनी कमजोरियों को अपनी अच्छाशक्ति में बदल सकते हैं । बस ज़रूरत है तो अपने अंदर के एक अच्छे और ईमानदार शिक्षक को जगाने की ताकि एक श्रेष्ठ विद्यार्थी तैयार हो सके।

सभी शिक्षकों को शिक्षक दिवस की बहुत बहुत शुभकामनाएँ!

- योगिता सदानी जी

पौळा - पिठोरा

पोला-पिठोरा (पोळा) - किसानों का प्रमुख त्यौहार

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में बैलों को देवता तुल्य माना गया है। इसलिए बैलों का सम्मान करने के लिए यह **पोला-पिठोरा** त्यौहार मनाया जाता है। जो हमारी मदद करते है उनके प्रति आभार प्रकट करना यह हमारी संस्कृति सिखाती है। **महाराष्ट्र में पोळा या बैल पोला श्रावण अमावस्या को मनाया जाने वाला बैलों का त्यौहार है।** कई जगह पर यह त्यौहार दो दिन मनाते है। पहले दिन को **'बड़ा पोला'** और दूसरे दिन को **'तान्हा पोला'** यानी **बच्चों का पोळा** कहते है।

किसानों के लिए यह त्यौहार बहुत महत्वपूर्ण है। यह एक मराठी त्यौहार है जो बैलों के प्रति कृतज्ञता एवं आभार प्रकट करने हेतु मनाया जाता है। इस पर्व तक खेती-किसानी, निंदाई, रोपाई आदि का कार्य समाप्त हो जाता है। साल भर बैल बलि राजा यानी किसानों के साथ खेत में हमारे लिए काम करते है, इसलिए इस दिन बैलों को आराम दिया जाता है।

पोळे के एक दिन पहले बैलों को न्यौता दिया जाता है। अगले दिन किसान बैलों की पूजा करते है। जिनके यहाँ खेती नहीं होती वो लोग मिट्टी के बैल बनाकर पूजा करते है। बैलों को नदी या तालाब के किनारे ले जाकर स्नान कराते है, उनके कंधों को हल्दी और तेल या घी से सेका जाता है। फिर बैलों को रंग लगाकर और अलग-अलग प्रकार के जेवर पहन कर सजाया जाता है। पीठ पर झूल, गले में माला और हार, पैरो में चाँदी के कड़े, घुँगरू आदि से सजाते है। खाने में अच्छे अच्छे पकवान बनाकर खासकर पुरणपोळी का बैलो को भोग लगाया जाता है। इस दिन बैल जोड़ी का ढोल ताशों के साथ जुलूस निकला जाता है। इस पर्व पर खास पोळे के गीत गए जाते है। गांव में सब बैल जोड़ी को साथ लाया जाता है और **'बैल सजाओ प्रतियोगिता'** का आयोजन किया जाता है और गाँव के किसी मान्यवर व्यक्ति से पत्तों की माला काटी जाती है उसे **'पोळा फूटना'** कहते है। बैलों को पहले हनुमानजी के मंदिर ले जाकर फिर घर ले जाया जाते है। उसके बाद घर की औरतें बैल की पूजा करती है। बैल ले जाने वाले व्यक्ति को **'बोजारा'** यानी पैसे दिए जाते है। पहले गाँवो में इस अवसर पर **'बैल दौड़'** का भी आयोजन किया जाता था।

तान्हा पोळा -

तान्हा पोला खासकर विदर्भ में मनाया जाता है। चार पांच दिन पहले से बाजार में मिट्टी के और लकड़ी के बैल बिकने के लिए आ जाते है। लोग उन्हें खरीदकर अपने-अपने घर पर उसकी पूजा करते है। दूसरे दिन बच्चे अपने-अपने बैलो को सजाकर खुद भी अलग-अलग वेशभूषा करके प्रतियोगिता में शामिल होते है। इसकी तैयारी एक हफ्ते पहले से शुरू हो जाती है। बच्चे, बड़े और घर के सभी लोग तैयारी मे जुट जाते है। लकड़ी के बैल यानी जिसे **नंदी** भी कहते है, उसे सजाने में लग जाते है। यह लकड़ी के नंदी छोटे से लेकर असली बैल जितने ऊँचे भी होते है।

शाम को **'पोळा फूटने'** के बाद इन सजाये हुए नन्दियों के साथ अलग-अलग वेशभूषा में बच्चे प्रतियोगिता में भाग लेते है। यह प्रतियोगिता अनेक मंदिरों तथा नगरों में आयोजित की जाती है। फिर सभी बच्चों को प्रसाद और उपहार देकर सम्मानित किया जाता है। बाद में सभी बच्चे अपने अपने नन्दियों को लेकर लोगों के घर जाते है। सभी घर की औरतें उनकी आरती उतारती है, फिर बच्चों को मिठाई और **'बोजरा'** यानी पैसे देने का रिवाज है।

इस त्यौहार का उद्देश्य बच्चो को खेती और खेती में काम करने वाले बैलों के प्रति आदर निर्माण करना और उनका महत्व बताना है।

- प्राजक्ता बडे जी

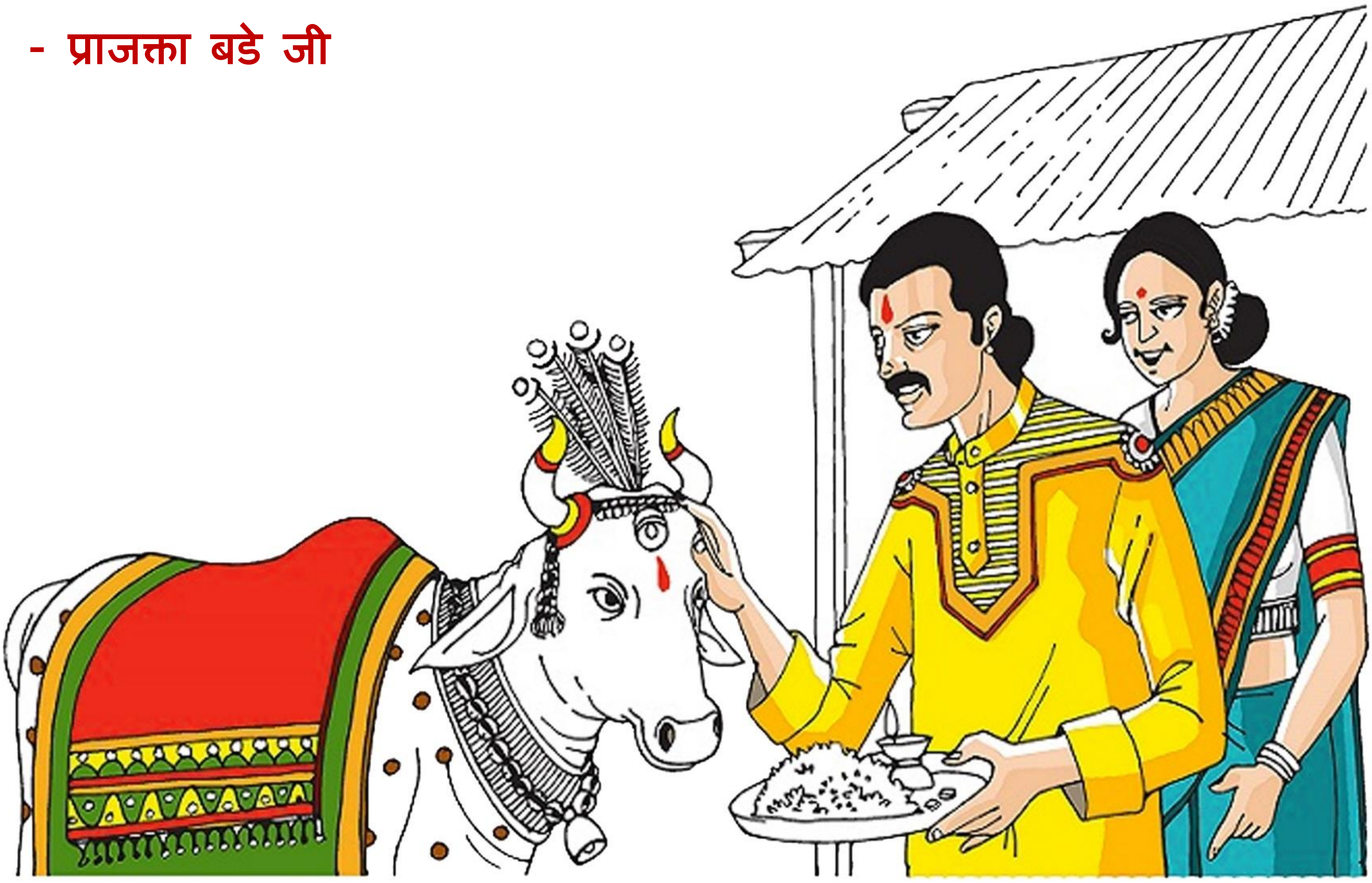

अगर आप अपने

‘शब्दों के मोती’

भारतीय परम्परा

‘की माला में पिरोना’

चाहते है तो हमें

सम्पर्क करें!

paramparabhartiya@gmail.com

आपका लेख वेबसाईट पर भी
प्रकाशित किया जाएगा

भारतीय परम्परा

शिक्षा जीवन का आधार - लघुकथा

अरे गंगा मौसी आज फिर आपने आने में देरी कर दी मुझे समय से शाला पहुंचना होता है, विद्यार्थियों को अनुशासन सिखाती हूँ तो मुझे भी अनुशासित रहना चाहिए। बहूरानी अभी कर देती हूँ काम चिंता ना करो, आज हो गई जरा देरी। बहूरानी हमारी बस्ती में बच्चे शाला तो जाते है पर पढ़ते नहीं है। मेरे अगल बगल की सभी महिलाएं पूछने लगी क्या तुम्हारी मेमसाब हर इतवार आकर हमारे बस्ती के बच्चों को पढा देगी...? हां मौसी क्यों नहीं... आज के बच्चों के हाथों कल देश का भविष्य है और विद्यादान तो सर्वश्रेष्ठ दान है, बच्चे किस शाला में जाते हैं मुझे वहां भी ले चलना मैं वहां के अध्यापकों से बात करूंगी ठीक है। अभी तो मुझे शाला जाना है। कल शाम तुम बस्ती के बच्चों को और उनके माता-पिता को एक जगह बुलाकर रखना।

दूसरे दिन संध्या समय नेहा बस्ती में गई वहां का वातावरण और बच्चों में अत्यधिक उदंडता देख वह आहत हुई उसने मन ही मन निश्चय किया इस बस्ती में वह ज्ञान यज्ञ की अखंड ज्योत प्रज्वलित कर अपना जीवन सार्थक करने के साथ ही बच्चों के उज्जवल भविष्य निर्माण में सहायक बनेगी यह कार्य था तो चुनौती पूर्ण किंतु संकल्प से सिद्धि मिलती ही है यह सोचकर वह प्रबल आत्मविश्वास के साथ सेवा कार्य में जुट गई। करीब करीब तेरह चौदह बच्चे आए थे हर इतवार सुबह तीन घंटे की क्लास होना तय हुआ। नेहा शुरुआत में बच्चों को बोधात्मक कहानियां सुनाती जिस से उनका अध्ययन के प्रति रुझान बढ़े, उनके भीतर आत्मविश्वास की ज्योत जगमगाये। कुछ बच्चों के साथ सामंजस्य स्थापित करने में समय जरूर लगा पर नेहा की मेहनत रंग लाई। धीरे धीरे बच्चों में अध्ययन के प्रति रुचि विकसित हुई उनमें संस्कार के बीज बो दिए थे जो पौधा बन विकसित होने तैयार थे। बच्चों में अपने करियर के प्रति जागरूकता देख नेहा को अत्याधिक खुशी हुई। बच्चों के मन में भी परिवार की काया पलट हो यह इच्छा निर्माण हुई और वह

उस दिशा हेतु अध्ययन करने लगे जब कोई कठिनाई आती वह नेहा टीचर से अपनी समस्या साझा करते। अपनी व्यस्तता के बावजूद शिक्षिका नेहा ने जो बच्चे बड़े हो गए थे उन्हें उच्च शिक्षा के लिए तैयार करने के उद्देश्य से प्रतिदिन एक घंटे की क्लास अपने घर में लेने लगी कुछ सहायक अध्यापक भी इस शिक्षा यज्ञ में शामिल हुए। शिक्षिका नेहा निरंतर इस सेवा कार्य में लगी थी। अलग-अलग सेवा भावी संस्थाओं से होनहार छात्रों को आर्थिक मदद का भी इंतजाम करने लगी।

आज वर्षों बाद बस्ती के तीन बच्चे जो अब उच्च शिक्षा ग्रहण कर आत्मनिर्भर बन गये और अच्छे वेतन के साथ उनकी नियुक्ति हुई थी। आज शिक्षक दिवस पर नेहा टीचर का आशीर्वाद लेने आये उनके नेत्रों से आनंदाश्रु बह रहे थे, वो नेहा टीचर के चरण स्पर्श कर भावविभोर हो कह रहे थे टीचर अंधेरे से निकाल आपने हमारे जीवन को रोशनमय किया आज हम गुरु दक्षिणा देने में समर्थ है। आप आज्ञा दीजिए... हम आपका ऋण चुका तो नहीं सकते किंतु आपके द्वारा चल रहे इस ज्ञान यज्ञ की ज्योत में किसी न किसी रूप में आहुति जरूर दे सकते हैं। अपने सपने को साकार रूप में देख नेहा ने कहा बेटा "**शिक्षा जीवन का आधार है**" यह शिक्षा रूपी यज्ञ खंडित ना हो पाए बस तुम्हें इसका ध्यान रखना होगा।

- राजश्री राठी जी

नागपुर का मारबत पर्व

पूरा पढ़े

*T&C Applied

WHITE BERRY
RESIDENCY

FESTIVAL
BONANZA

1 BHK
1.19 CR*

2 BHK
1.77 CR*

All Inclusive

Visit Sample FLAT Now!!

www.whiteberryresidency.com

98705 80810, 85913 69996

MXCREATIVITY
Brand Creation & Digital Marketing

80805 18745

www.mxcreativity.com

Logo Design
Graphic Design
Web Design
Mobile App
Animated Video
Digital Marketing

Kings wed Queens

www.kingswedsqueens.com

Create your MEMORIES
With Us

WEDDING

LOGO
INVITATION
WEBSITE
Festival Greeting

हरतालिका तीज व्रत श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को हस्त नक्षत्र के दिन आता है। इस दिन सुहागन और कुंवारी लड़कियां गौरी-शंकर की पूजा करती हैं। मान्यता है कि हरतालिका तीज का व्रत सुहागिन महिलाएं अपने पति की दीर्घायु के लिए निर्जला व्रत रखती हैं और कुंवारी लड़कियो मनचाहे वर की प्राप्ति के लिए व्रत रखती है। यह त्योहार भारत के लगभग सभी प्रांतों में मानते है पर मुख्य रूप से महाराष्ट्र, बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और मध्य प्रदेश में मनाया जाता है। हरतालिका व्रत को **"हरतालिका तीज या तीजा"** भी कहते हैं। कर्नाटक, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में इस व्रत को **"गौरी हब्बा"** के नाम से जाना जाता है। उत्तर प्रदेश और बिहार में मनाया जाने वाला यह त्योहार करवा चौथ से भी कठिन माना जाता है क्योंकि जहां करवा चौथ में चांद देखने के बाद व्रत खोल दिया जाता है वहीं इस **व्रत में पूरे दिन निर्जला व्रत किया जाता है और अगले दिन पूजन के पश्चात ही व्रत खोला जाता है।**

सर्वप्रथम इस व्रत को माता पार्वती ने भगवान शिव शंकर के लिए रखा था। इस दिन विशेष रूप से भगवान गौरी-शंकर का ही पूजन किया जाता है। इस दिन व्रत करने वाली स्त्रियां सूर्योदय से पूर्व ही उठ जाती हैं और नहा धोकर पूरा श्रृंगार करती हैं।

शास्त्रों के अनुसार महिलाएं संकल्प लेती है जिसमे **"उमा महेश्वर सायुज्य सिद्धये हरतालिका व्रतमहं करिष्ये"** और समस्त पूजा सामग्री एकत्रित करती है। पूजन के लिए केले के पत्तों से मंडप बनाकर गौरी-शंकर की प्रतिमा स्थापित की जाती है। इसके साथ पार्वती जी को सुहाग का सारा सामान चढ़ाया जाता है और शिवजी भगवान को धोती और अँगोछा चढ़ाते है। रात में भजन, कीर्तन करते हुए जागरण कर तीन बार आरती की जाती है और शिव पार्वती विवाह की कथा सुनी जाती है।

इस व्रत के व्रती को शयन करना निषेध है इसके लिए उसे रात्रि में भजन कीर्तन के साथ रात्रि जागरण करना पड़ता है प्रातः काल स्नान करने के पश्चात् श्रद्धा एवं भक्ति पूर्वक ब्राह्मणी या किसी सुहागिन महिला को श्रृंगार सामग्री, वस्त्र, खाद्य सामग्री, मिष्ठान्न एवं यथा शक्ति आभूषण का दान करना चाहिए तथा धोती और अंगोछा ब्राह्मण को दे।

लिंग पुराण की एक कथा के अनुसार माँ पार्वती ने अपने पूर्व जन्म में भगवान शंकर को पति रूप में प्राप्त करने के लिए हिमालय पर गंगा के किनारे अपनी बाल्यावस्था में अधोमुखी होकर घोर तप किया। इस दौरान उन्होंने अन्न का सेवन नहीं किया। काफी समय सूखे पत्ते खाकर और कई वर्षों तक उन्होंने केवल हवा खाकर ही व्यतीत किया। माता पार्वती की यह स्थिति देखकर उनके पिता अत्यंत दुखी थे। इसी दौरान एक दिन महर्षि नारद भगवान विष्णु की ओर से पार्वती जी के विवाह का प्रस्ताव लेकर माँ पार्वती के पिता के पास पहुंचे, जिसे उन्होंने सहर्ष ही स्वीकार कर लिया। पिता ने जब अपनी पुत्री पार्वती को उनके विवाह की बात बताई तो वह बहुत दुखी हो गई और जोर-जोर से विलाप करने लगी। फिर एक सखी के पूछने पर माता ने उसे बताया कि वह यह कठोर व्रत भगवान शिव को पति रूप में प्राप्त करने के लिए कर रही हैं जबकि उनके पिता उनका विवाह विष्णु से कराना चाहते हैं। तब एक सहेली की सलाह पर माता पार्वती घने वन में चली गई और वहां एक गुफा में जाकर भगवान शिव की आराधना में लीन हो गई। भाद्रपद तृतीया शुक्ल के दिन हस्त नक्षत्र को माता पार्वती ने रेत से शिवलिंग का निर्माण किया और भोलेनाथ की स्तुति में लीन होकर रात्रि जागरण किया। तब माता के इस कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उन्हें दर्शन दिए और इच्छा अनुसार उनको अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार किया। मान्यता है कि इस दिन जो महिलाएं विधि-विधान पूर्वक और पूर्ण निष्ठा से इस व्रत को करती हैं, उन्हें अपने मन के अनुरूप पति की प्राप्ति होती हैं। साथ ही **यह पर्व दांपत्य जीवन में खुशी बरकरार रखने के उद्देश्य से मनाया जाता है।**

जीवन एक संसार

अंधेरे को हटाने में समय
बर्बाद मत करों बल्कि
दीये को जलाने में समय
लगाइए ।
दूसरों को नीचा दिखाने में
नहीं बल्कि असहाय को
आगे बढाने में समय
लगाइए ॥

कभी खुशहाल,
तो कभी उदास होगी
कभी जीत,
तो कभी हार होगी
यह जिंदगी की सडक है
धीरे-धीरे ही पार होगी ॥

तिरस्कार यदि बार-बार
अपनों से ही मिले तो
शब्दों का विवाद उचित नहीं
क्योंकि जो व्यक्ति आपके
शब्दों और आपके महत्व
को नहीं समझा
वो आपकी भावनाओं
को क्या समझेगा !!

भगवान से भी बडे
माता-पिता होते हैं
क्योंकि भगवान सुख-दुःख
दोनों देते हैं पर माता-पिता
सिर्फ सुख देते हैं ॥

अपने काम को खुद करने
से अनुभव और
रचनात्मकता बढती है,
इसलिए अपने काम
खुद करें ॥

गणेश चर्तुथी उत्सव

बहुत पहले की बात है जब सृष्टि की शुरुआत हुई थी तब यह सवाल उठा कि **प्रथम पूजनीय किसे माना जाये?** सभी देवगण भगवान शिव के पास गए और इस समस्या के लिए सुझाव माँगा तब शिव जी ने कहा कि जो भी देव पृथ्वी की परिक्रमा पूरी करके सबसे पहले आएगा वो प्रथम पूजनीय होगा।

सभी देवगण अपने-अपने वाहन से पृथ्वी की परिक्रमा करने के लिए निकल गए। चूँकि गणेश जी का अपने वाहन मूषक के साथ परिक्रमा लगा के पहले आना नामुमकिन था, तब बुद्धि के देवता गणेश जी ने अपनी बुद्धि कौशल से काम लिया और हाथ जोड़ कर अपने माता-पिता (माँ पार्वती और भगवान शिव) की ३ परिक्रमा कर ली। तब भगवान शिव ने कहा कि तुमसे बड़ा बुद्धिमान और समझदार इस संसार में कोई नहीं है, माता-पिता की ३ परिक्रमा का अर्थ ३ लोक की परिक्रमा करना होता है, जिसका पुण्य पृथ्वी की परिक्रमा से भी कहीं अधिक बड़ा है। इसलिए गणेशजी को प्रथम पूजनीय घोषित किया। तब से ही किसी भी कार्य को निर्विघ्न पूर्ण करने के लिए पहले भगवान गणेश की पूजा करते हैं और इसलिए **गणेश जी को विघ्नहर्ता** भी कहते है।

गणेश चतुर्थी, जिसे विनायक चतुर्थी के नाम से भी जाना जाता है, भगवान शिव और देवी पार्वती के छोटे पुत्र **श्री गणेश जी के जन्मदिन** के रूप में मनाया जाता है। हिंदू कैलेंडर के अनुसार भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को यह शुभ त्यौहार मनाया जाता है।

वैदिक काल में धार्मिक ग्रंथों के अनुसार वेद व्यास जी ने आँखें बंद करके १ ही आसन पर बैठ कर महाभारत की कथा गणेश जी को १० दिन में सुनाई और ११ दिन पर आँखें खोली तब देखा कि गणेश जी का शरीर बहुत अधिक तप रहा था। उन्होंने गणेश जी को पास ही बने पानी के कुंड में स्नान करवाया जिससे उनका तापमान कम हो सके। तभी से गणेश चतुर्थी पर गणेश जी की पूजा १० दिन तक की जाने लगी और ११वें दिन (अनंत चतुर्दशी) पूजा के बाद गणेश विसर्जन किया जाता है। इसे **'उत्तर पूजा'** के रूप में जाना जाता है।

ऐतिहासिक तथ्यों से पता चलता है कि **गणेश चतुर्थी उत्सव महाराष्ट्र में महान मराठा शासक छत्रपति शिवाजी महाराज द्वारा संस्कृति और राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने के लिए शुरू किया गया था।**

गणेशोत्सव पहले सिर्फ घरों में ही मनाते थे, लेकिन **सन् १८९३ से ये सामूहिक उत्सव के रूप में बड़े-बड़े पंडालों में मनाया जाने लगा जिसकी शुरुआत बाल गंगाधर तिलक जी ने अंग्रेजों के विरुद्ध एकजुट होने के उद्देश्य से महाराष्ट्र से की थी।** तब से इस पर्व की धूम महाराष्ट्र राज्य में बहुत अधिक है।

गणेश चतुर्थी का पर्व भारत के कई राज्यों में और यहाँ तक कि कई दूसरे देशों जैसे थाईलैंड, कंबोडिया, इंडोनेशिया और नेपाल में भी भक्ति और खुशी से मनाई जाती है। महाराष्ट्र के अलावा गोवा, केरल, तमिलनाडु, राजस्थान में भी यह उत्सव मनाया जाता है। राजस्थान में इसे **"डांडिया चौथ"** भी कहते है और यह लड़कों का त्यौहार माना जाता है। भगवान गणेश को 108 विभिन्न नामों से जाना जाता है। व्यापक रूप से इनमें गणपति या विनायक के रूप में जाना जाता है।
गणेश जी की २ पत्नियां ऋद्धि और सिद्धि है, और
इनका प्रिय भोग मोदक है।

गणपति बाप्पा मोरया

हिंदी हमारी आन बान और शान है,
हिंदी से ही हिंदुस्तान है।।

हिंदी लगे सबसे प्यारी
मीठी बोली मधुर है भाषा,
हिंदी ही संस्कृति की पहचान है
हिंदी हमारी शान है।।

सुख-दुख प्रेम या क्रोध
हर शब्द निश्चल चंचलता से भरा,
भावनाओं का उमड़ता समंदर है,
हिंदी हमारी शान है।।

चाहे हम हो कितने भी मॉडर्न
अंग्रेजी के हैं हम पूजक
पर दर्द और प्यार को हिंदी में ही बयां कर पाते हैं
क्योंकि हिंदी हमारी पहचान है
हिंदी से ही हिंदुस्तान है।।

- योगिता सदानी जी

ऋषि पंचमी | माहेश्वरी रक्षाबंधन

सप्त ऋषियों का आशीर्वाद प्राप्त करने और सुख, शांति, मंगल और समृद्धि की कामना से यह व्रत रखा जाता हैं।

विस्तृत में पढ़ें

राधा अष्टमी | राधा जन्मोत्सव

राधाष्टमी यानी देवी राधा का जन्मदिन यह हर साल भाद्र पद शुक्ल अष्टमी तिथि को मनाया जाता है।

विस्तृत में पढ़ें

तेजा दशामी पर्व

बाबा की सवारी (**वारा**) जिसे आती है, उसके द्वारा रोगी, दुःखी, पीड़ितों का धागा खोला जाता है एवं महिलाओं की गोद भरी जाती है।

विस्तृत में पढ़ें

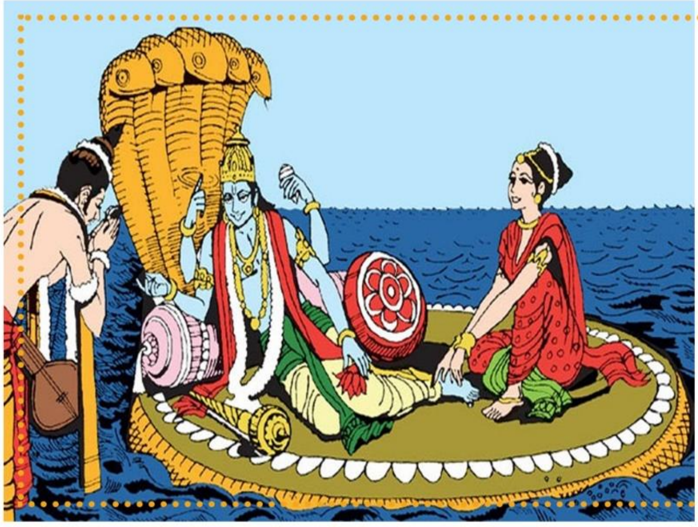

परिर्वतनी एकादशी पर्व

भगवान विष्णु के एकादशी तिथि में अपना करवट बदलने या परिवर्तित करने के कारण ही इसे परिवर्तिनी एकादशी कहा जाता है|

विस्तृत में पढ़ें

हिन्दी भाषा से जुडे तथ्य

1.फारसी शब्द **‘हिन्द’** से ही हिन्दी शब्द की उत्पत्ति हुई है जिसका अर्थ **‘सिंधु नदी की भूमि’** होता है।
2. हिन्दी संस्कृत का अपभ्रंश है। **संस्कृत को देवों की भाषा** भी कहा जाता है। हिन्दी और संस्कृत दोनों को **देवनागरी लिपि** में लिखा जाता है। देवनागरी लिपि का मतलब होता है देवों के यहां लिखी जाने वाली लिपि।
3. भारत में आज के समय बोली जाने वाली हिन्दी को आधुनिक हिन्दी या **मानक हिन्दी** कहा जाता है।
4. हिंदी को आधिकारिक भाषा का दर्जा देने वाला **पहला राज्य बिहार** है। **1881 में बिहार ने उर्दू** को हटा कर हिंदी को अपनी आधिकारिक भाषा घोषित किया था।
5. हम 14 सितम्बर को हिंदी दिवस मनाते हैं क्योंकि सन **1949 में आज ही के दिन भारतीय संविधान ने हिन्दी भाषा को राजभाषा** का दर्ज़ा दिया था।
6. भारत के हर क्षेत्र की अपनी अलग अलग भाषाएँ बोली जाती हैं, फिर भी देश के करीब 77% लोग हिन्दी बोलते और समझते हैं| हिंदी भारत में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है।
7. विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में **हिंदी का स्थान चौथे नंबर** आता है।
8. किसी अन्य भाषा को सिखने की बजाय हिंदी भाषा सीखना बहुत आसान है क्योंकि हिंदी शब्दों को उसी तरह लिखा जाता है जैसे उन्हें बोला जाता है।
9. भाषाई रूप से हिन्दी और उर्दू दोनों एक ही भाषाएं है। **हिन्दी को जहां देवनागरी लिपि** में लिखा जाता है और इसमें संस्कृत के शब्दों की भरमार है। वहीं **उर्दू को पर्सियन लिपि** में लिखा जाता है और इसमें पर्सियन शब्द ज्यादा है।
10. **अमेरिका के 45 और विश्व भर के करीब 176 विश्वविद्यालयों** में हिन्दी पढ़ाई जाती है।
11. **विदेशो में 25 से भी अधिक पत्र - पत्रिकाएं** हिंदी में प्रकाशित होती है।
12. अंग्रेजी भाषा के सैकड़ों शब्द हिंदी से लिए गए हैं जैसे - कर्मा, योगा, बंगला, चीता, लूटपाट, ठग, अवतार, महात्मा, जंगल इत्यादि।
13. हिन्दी भाषा के इतिहास पर आधारित रचना करने वाले सबसे पहले लेखक कोई भारतीय नहीं बल्कि एक **फ्रांस के लेखक ग्रासिन द तैसी** थे।

14. संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिन्दी में पहली बार 1977 में संबोधित किया गया था, तब तत्कालीन **विदेश मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी** ने हिंदी में भाषण देकर देश का दिल जीत लिया था।

15. इंटरनेट पर ज्यादातर इस्तेमाल अंग्रेजी भाषा का ही होता है लेकिन फिर भी हर 5 में से 1 व्यक्ति इंटरनेट को हिंदी में चलाना पसंद करता है। अंग्रेजी की तरह आप हिंदी में भी वेबसाइट एड्रेस बना सकते है।

16. हिंदी शब्द **'हरि'** एक ऐसा शब्द है जिसके दर्जन से भी ज्यादा मतलब होते हैं जैसे यमराज, पवन, इन्द्र, चन्द्र, सूर्य, विष्णु, सिंह, किरण, घोड़ा, तोता, साँप, वानर, मेंढक, वायु, और उपेन्द्र आदि।

17. सबसे पहले हिंदी में कविता लिखने वाले शख्स प्रख्यात कवि **'अमीर खुसरो'** थे।

18. अंग्रेजी में सबसे अधिक बोला जाने वाला शब्द "हेलो" है, वैसे ही **"नमस्ते"** हिंदी का सबसे ज्यादा बोला जाने वाला शब्द है।

19. 1805 में प्रकाशित हुई **'प्रेम सागर'** को हिंदी की पहली प्रकाशित पुस्तक माना जाता है, जिसे **लल्लू लाल जी** ने लिखा था।

20. हिंदी भाषा में उच्चारण के आधार पर 45 वर्ण होते हैं। इनमें 10 स्वर और 35 व्यंजन होते हैं। लेखन के आधार पर 52 वर्ण होते हैं इसमें 13 स्वर, 35 व्यंजन तथा 4 संयुक्त व्यंजन होते हैं।

21. हिंदी भारत की भाषा है लेकिन भारत के अलावा इन देशों में भी बोली समझी जाती है - फिजी, सूरीनाम, मॉरीशस, गुयाना, नेपाल, त्रिनिदाद एवं टोबैगो।

हिन्द देश का गौरव है हिन्दी
शब्द और भाव की पहचान है हिन्दी
लगती शब्द पर जब एक बिंदी
कर देती सार्थक
ऐसी मेरी राष्ट्र भाषा है हिन्दी

- संगीता दरक जी

पारम्परिक व्यंजन - राघवदास लड्डू

पूनम जी राठी

सामग्री –

- दो कटोरी रवा (सूजी), दो कटोरी दलिया रवा, दो कटोरी घी, एक चम्मच इलायची पाउडर, बादाम, काजू, किशमिश, चार कटोरी शक्कर, पाव किलो खोया, आधा कप दूध, 8-10 केसर के लच्छे या फिर केसरिया कलर

विधि –

- मोटे (जाड़े) पेदें की कढ़ाई लेकर उस में पौना कप घी और रवा डालकर धीमी आंच पर खुशबू आने तक भूने
- दूसरे कढ़ाई में बचा हुआ घी लेकर धीमी आंच पर दलिया वाला रवा खुशबू आने तक भूने, फिर नीचे उतार कर दूध का हल्का सा छींटा मार के अच्छे से मिक्स करे और भुने हुए रवे में डाल कर अच्छे से मिलाये
- कढ़ाई में खोया गुलाबी कलर तक का होने तक भूने, एक भगोने या थाली में लेकर हल्का गर्म रह गए तभी सभी सामग्री को अच्छे से मिक्स करे और उसमें इलायची पाउडर एवं मेवा डाल कर अच्छे से मिलाये
- 4 कटोरी शक्कर में डेढ़ कटोरी पानी डालकर एक तार की चाशनी बनाये उसमे थोड़ा केसर या कलर डालकर गैस बंद करदे, फिर रवा और खोया के मिश्रण को डालकर अच्छे से मिक्स करे
- इस मिश्रण को मनपसंद आकार दे, लड्डू या मोदक बना लेना और लड्डू के ऊपर काजू किशमिश लगा दे

आपके राघवदास लड्डू गणपति जी को चढ़ाने के लिए तैयार है।

गणपति जी का प्रिय भोग लड्डू और मोदक है।

अंनत चतुर्दशी पर गणेश विर्सजन

हिंदू पंचांग के अनुसार 10 दिनों तक चलने वाले गणेशोत्सव पर घरों और पंडालों में स्थापित **विघ्नहर्ता भगवान गणेश जी की मूर्ति का विसर्जन अनंत चतुर्दशी** पर किया जाता है। लोगों ने 10 दिनों तक बप्पा को अपने घरों में विराजित किया, उनकी पूजा अर्चना की, उनके पसंदीदा चीजों का भोग लगाया, उन्हें आदर, प्यार स्नेह दिया और फिर अब उनके विदा होने का वक्त आ गया है जो बेहद कष्टदायक होता है। इस दिन बप्पा जी का विधि पूर्वक विसर्जन किया जाता हैं ताकि अगले वर्ष वो जल्दी आये और गणेश जी का आशीर्वाद मिलने से घर में सुख एवं समृद्धि आती है। जिस तरह हम ख़ुशी से नाचते गाते बप्पा को घर लेकर आते हैं ठीक उसी तरह से हम उनका विसर्जन भी करते हैं ताकि वो हंसी-खुशी अगले साल हम पर अपनी कृपा फिर से बरपा सकें। **"गणपति बप्पा मोरिया, अगले बरस तू जल्दी आना"** के जयकारों के साथ अगले बरस जल्दी आने की कामना की जाती है। **भक्त अपने-अपने हिसाब से 1.5, 3, 5, 7 और 10 दिनों में भी गणेश विसर्जन करते हैं।**

विसर्जन की विधि -

भगवान गणेश के विसर्जन वाले दिन भी बप्पा की विधिपूर्वक पूजा करें जैसे प्रतिदिन करते हैं। गणेश जी की आरती करके बप्पा को भोग अर्पित करें। उसके बाद एक लकड़ी का साफ-सुथरा पाटा लेकर उस पर गंगाजल डालकर पवित्र कर दें। उस पाटे पर कुमकुम से स्वास्तिक बनाएं, उस पर अक्षत अर्पित करें और लाल या पीले रंग का कपड़ा पाटे पर बिछाएं। कपड़े के चारों कोनों पर पूजा की सुपारी रखें, गुलाब के फूलों और पंखुड़ियों को पट्टे पर बिखेर दें। गणेश जी के जयकारों के साथ सावधानी से गणेश जी की प्रतिमा को उठाकर पाटे पर रखें और साथ में गणेश जी के प्रिय मोदक, फल, फूल कुमकुम और वस्त्र, आदि भी रखें।

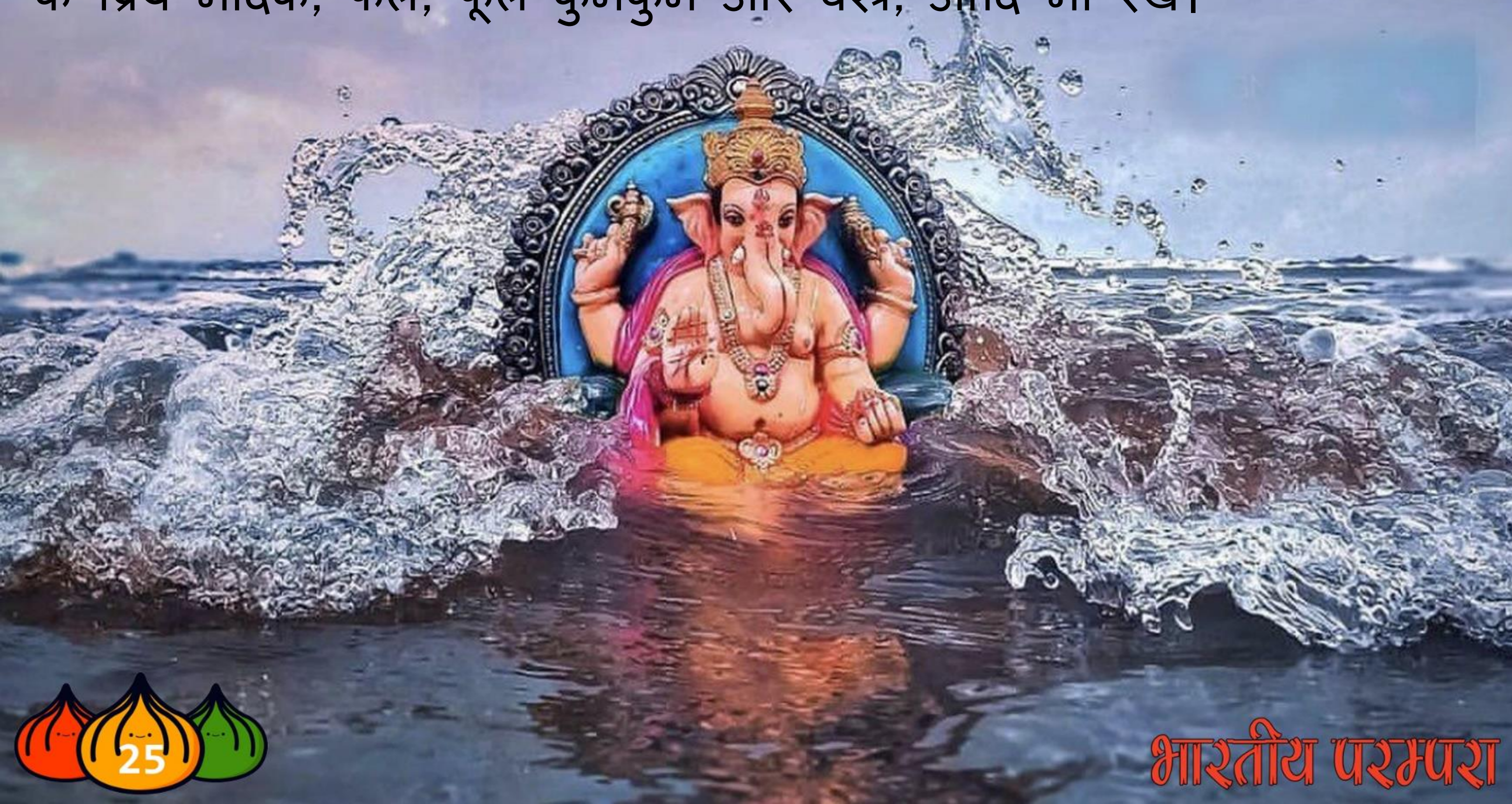

इसके बाद एक कपड़े में चावल, गेहूं और पंचमेवा लेकर उसकी पोटली बना लें और साथ में बांधे, उसमे दक्षिणा भी रखें, इस पोटली को एक छोटी सी लकड़ी की छड़ी में बांध दें। ऐसा करने के पीछे मान्यता है कि इसे भगवान गणेश को विसर्जन के लिए ले जाते समय रास्ते में किसी भी प्रकार की कोई परेशानी नहीं होती है। जिस स्थान पर बप्पा का विसर्जन करना है, वहां पहुंचकर सर्वप्रथम कपूर जलाकर आरती करें। गणेश जी के समक्ष प्रार्थना करते हुए उनसे आशीर्वाद लें और बप्पा से क्षमा माँगे और खुशी-खुशी जयकारों के साथ बप्पा को विदा कर दें। गणेश जी की प्रतिमा को विसर्जित करते समय ऐसे ही पानी में नहीं डालना चाहिए। उन्हें ३ डुबकी लगाके बहुत ही सम्मान के साथ धीरे-धीरे विसर्जित करना चाहिए।

कोरोना काल के कारण इस बार सामूहिक रूप से गणपति जी का विसर्जन नदियों में नहीं किया जा सकता जो आपकी और लोगों की सुरक्षा के लिए ठीक भी है। ऐसे में आप घर पर ही गणेश जी का विसर्जन करें। उसके लिए एक गमले में पानी भरकर उसमें गणेश जी की प्रतिमा को विसर्जित करें और उसके बाद उसमें थोड़ी और मिट्टी डालकर पौधा लगा दें, लेकिन याद रहे की उस गमले में कभी तुलसी का पौधा न लगाएं क्योंकि तुलसी भगवान गणेशजी को नहीं चढ़ाई जाती है।

अंनत चतुर्दशी का महत्व

गणपति जी विसर्जन के साथ साथ इस दिन भगवान विष्णु जी के अनंत स्वरूप की पूजा अर्चना भी की जाती है। **अनंत चतुर्दशी पर भगवान विष्णु, यमुना नदी और शेषनाग जी** की पूजा की जाती है| शास्त्रों के अनुसार अनंत चतुर्दशी के दिन व्रत रखते है और **अनंत सूत्र** बांधते है जिससे जीवन के सभी कष्टों और रोगो से मुक्ति मिलती है| अनंत राखी के समान रूई या रेशम के कुंकू या हल्दी के रंग में रंगे धागे होते हैं और उनमें चौदह गांठे होती हैं। पुरुष दाएं तथा स्त्रियां बाएं हाथ में अनंत धारण करती हैं। अनंत चतुर्दशी व्रत कर मनवांछित फल को प्राप्त कर सकते है।

हँसी खुशी के पल

जिंदगी घडी डिटर्जेंट
जैसी हो गयी है...

लोग इस्तेमाल तो करते हैं
पर विश्वास नहीं करते !!

हम तन्हा ही चले थे
जिंदगी का दही जमाने...
रास्ते मे बुँदियाँ
मिलती गयी...
और
जिंदगी का रायता बन गया !!

LKG के बच्चे को
इम्तिहान में **0** मिला
पिता गुस्से से : ये
क्या है?
बच्चा : मेम के पास
स्टार खत्म हो गए थे
तो उन्होने मून दे दिया !!

ना जानें कौन-कौन से
विटामिन है ??
मोबाइल को
थोडी देर हाथ ना
लगाओ तो कमजोरी
आने लगती हैं !!

दिल अपना... जीवन अपना...
अहसास अपने...
फिर भी खेल कोई और जाता हैं !!

मान्यताओं के अनुसार सबसे पहले **अत्रि मुनि** ने श्राद्ध का उपदेश दिया था। इसके बाद सबसे पहला श्राद्ध **महर्षि निमि** ने निकाला था। बाद में धीरे-धीरे कई अन्य महर्षि भी श्राद्ध कर्म करने लगे और पितरों को अन्न का भोग लगाने लगे। जैसे-जैसे श्राद्ध की परंपरा बढ़ती गई देवता और पितर धीरे-धीरे पूर्ण रूप से तृप्त होते गए। जिसके बाद उन्हें भोजन को पचाने की समस्या सामने आने लगी, जिसका निवारण अग्नि देव ने निकाला था। हिन्दू धर्म में मृत्यु के बाद श्राद्ध करना बेहद जरूरी होता है। अगर किसी मृत व्यक्ति का विधिपूर्वक श्राद्ध और तर्पण ना किया जाए, तो उसे इस लोक से मुक्ति नहीं मिलती है। इसलिए पितरों की मुक्ति के लिए श्राद्ध करना चाहिए।

महाभारत युग में भी श्राद्ध के साक्ष्य मिलते है, शास्त्रों के अनुसार जब महाभारत के युद्ध में दानवीर कर्ण का निधन हो गया और उनकी आत्मा स्वर्ग पहुंची, तो उन्हें खाने के लिए भोजन की बजाय सोना, चांदी और गहने दिए गए। हैरान होकर कर्ण की आत्मा ने इंद्र देव से इसका कारण पूछा, तब इंद्र देव ने कर्ण को बताया कि आपने अपने पूरे जीवन में सोने-चांदी के आभूषणों का दान किया लेकिन कभी भी अपने पूर्वजों के लिए भोज दान नहीं दिया। तब कर्ण ने बताया कि वह अपने पूर्वजों के बारे में नहीं जानता है और उसे सुनने के बाद, भगवान इंद्र ने उसे 15 दिनों की अवधि के लिए पृथ्वी पर वापस जाने की अनुमति दी ताकि वह अपने पूर्वजों को भोजन दान कर सके। इसी 15 दिन की अवधि को पितृ पक्ष के रूप में जाना जाता है।

श्राद्ध क्या होते है - ब्रह्म पुराण के अनुसार पितरों की तृप्ति के उद्देश्य से उचित काल या स्थान पर पितरों के नाम उचित विधि पूर्वक जो कर्म श्रद्धा से किये जाये उन्हें श्राद्ध कहते है।

"श्रद्धया पितृन उद्दिश्य विधिना क्रियते यतकर्म तत श्राद्धम " ।।

श्रद्धा शब्द से ही श्राद्ध की उत्पत्ति हुई है। श्राद्ध में ब्राह्मणों के माध्यम से पितरों की तृप्ति के लिए भोजन कराया जाता है। पिण्ड रूप में पितरों को दिया गया भोजन भी श्राद्ध का अहम हिस्सा होता है। अपने मृत पितृगण के लिए श्रद्धा भाव से किये श्राद्ध को **पितृ यज्ञ** भी कहते है, जिसका वर्णन मनुस्मृति, वीर मित्रोदय, श्राद्ध कल्पलता, श्राद्ध तत्व, पितृदायिता आदि अनेक ग्रंथों में मिलता है।

पितरों को श्राद्ध की प्राप्ति कैसे होती है ?

आज के आधुनिक युग में यह जिज्ञासा स्वाभाविक है कि श्राद्ध में दी गयी भेंट और अन्न आदि सामग्री पितरो को कैसे मिलती है। मृत्यु के बाद जीव को अपने अपने कर्मो के अनुसार गति मिलती है, कोई देवता बनता है, कोई पितर, कोई प्रेत, कोई इंसान, कोई पशु - पक्षी, पेड़ तृण कुछ भी तो सबको अपनी योनि के हिसाब से श्राद्ध का फल मिल जाता है। इसमें अपनी गोत्र / जाति के अनुसार विश्व देव और अग्नि तत्व उनको श्राद्ध की सामग्री प्राप्त करवा देते है। **जातक देव योनि का है तो अन्न उसे अमृत के समान प्राप्त होता है, मनुष्य योनि में अन्न के समान और पशु पक्षी की योनि में तृण के समान, नाग योनि में वायु के रूप से और अन्य योनियों में उनके तृप्ति के समान उनको श्राद्धीय भोज प्राप्त होता है।** नाम, गोत्र, हृदय की श्रद्धा और सही तरीके से लिए संकल्प से उनको प्राप्त हो जाता है। जातक चाहे कितनी भी योनियां पार कर जाये उनके नाम का दिया श्राद्ध उन्ही को मिलता है, जिस प्रकार १ बछड़ा गौशाला में अपनी माँ गाय को ढूंढ लेता है उसी प्रकार श्राद्ध का सामान भी आपने जातक को मिल जाता है।

श्राद्ध की २ प्रक्रिया है -

1. पिंड दान २. ब्राह्मण भोजन

मृत्यु के बाद जो लोग देव योनि या पितृ योनि में जाते है उनको मंत्रो द्वारा बुलाये जाने पर वह घर पर आमंत्रित ब्राह्मण के माध्यम से भोजन कर लेते है। ब्रह्म वैवर्त पुराण के अनुसार देवताओं को प्रसन्न करने से पहले मनुष्य को अपने पितरों यानी पूर्वजों को प्रसन्न करना चाहिए। हिन्दू ज्योतिष के अनुसार भी पितृ दोष को सबसे जटिल कुंडली दोषों में से एक माना जाता है। पितरों की शांति के लिए हर वर्ष भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा से आश्विन कृष्ण अमावस्या तक के काल को पितृ पक्ष श्राद्ध होते हैं।

श्राद्ध की संक्षिप्त विधि -

सामान्य रूप मे कम से कम वर्ष में दो बार श्राद्ध करना अनिवार्य है, इसके अतिरिक्त अमावस्या, व्यतिपात, संक्रांति आदि पर्व की तिथियों में भी श्राद्ध कर सकते है।

(1) **क्षय तिथि** - जिस दिन व्यक्ति की मृत्यु होती है उस तिथि पर वार्षिक श्राद्ध करना चाहिये। शास्त्रों में क्षय तिथि पर **एकोद्दिष्ट श्राद्ध** करने का विधान है, **एकोद्दिष्ट का तात्पर्य है कि केवल मृत व्यक्ति के निमित एक पिण्ड का दान** तथा कम से कम एक ब्राह्मण को भोजन कराया जाये और अधिक से अधिक तीन ब्राह्मणों को भोजन कराया जाता है।

(2) **पितृ पक्ष** - पितृ पक्ष में मृत व्यक्ति की जो तिथि आये, उस पर मुख्य रूप से **पार्वण श्राद्ध** करने का विधान है। यथासंभव पिता की मृत्यु तिथि पर इसे अवश्य करना चाहिए। पार्वण श्राद्ध में पिता, पितामह (दादा), प्रपितामह (परदादा) सपत्नीक अर्थात माता, दादी एवं परदादी, और नाना, नानी, परनाना और परनानी का भी, इस प्रकार तीन पीढ़ी में छः व्यक्तियों का श्राद्ध होता है। इसके अतिरिक्त एक और भी लगाया जाता है, जिस पर अपने निकटतम सम्बन्धियों के निमित पिण्डदान किया जाता है| इसके अलावा दो विश्वदेव के श्राद्ध लगते है। इस तरह नौ श्राद्ध लगाकार पार्वण श्राद्ध सम्पन्न होता है, इसमें नौ ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए।

पितृ पक्ष में दान का क्या महत्व है –
पितृ पक्ष में दान का भी बहुत महत्व है, मान्यता है कि दान से पितरों की आत्मा को संतुष्टि मिलती है और पितृ दोष भी खत्म होता है।

क्या दान में देना चाहिए –

1. **काला तिल** - पितरों के तर्पण के निमित्त किसी भी चीज का दान करते समय काले तिल को लेकर दान करें, काले तिलों का दान संकट और विपदाओं से रक्षा करता है।
2. **चांदी (रजत)** - चांदी धातु से निर्मित किसी भी वस्तु का दान देने से पितरों की आत्मा को शांति मिलती है और साथ ही पितरों का आशीर्वाद प्राप्त होता है। चांदी का संबंध चंद्र ग्रह से है इसलिए श्राद्ध में चांदी, चावल और दूध देने से पितर खुश होते है।
3. **वस्त्र** - श्राद्ध पक्ष में वस्त्रों का दान करना चाहिए, मान्यताएं हैं कि जो व्यक्ति श्राद्ध करता है तो ऐसे में धोती, साड़ी आदि का दान करें, जिससे वंशजों को वस्त्र की प्राप्ति होती है।
4. **गुड़ और नमक** - श्राद्ध के समय गुड़ और नमक का दान करने से पितरों की आत्मा को शांति मिलती है और आपको उनका आशीर्वाद मिलता है जिससे घर में सुख-शांति आती है और गृह-क्लेश दूर होते है।
5. **जूते-चप्पल का दान** - पूर्वजों की आत्मा की शांति के लिए जूते चप्पलों का भी दान किया जाता है।

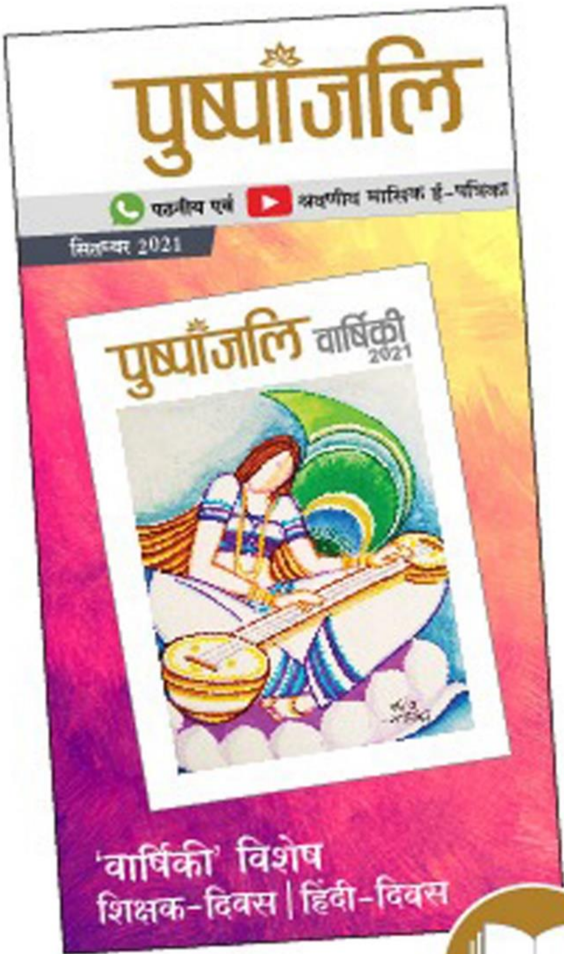

देश की पहली साहित्यिक ई-पत्रिका जो पढ़ी और सुनी भी जा सकती है तथा जिसमें संगीत के लिंक्स भी है जिनसे निर्मल आनंद उठाया जा सकता है।

मूल्य : मात्र आपकी मुस्कान

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका सन्देश स्वचालित रूप से पहुँच जायेगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नं. पंजीकृत हो जाएगा।

पत्रिका खोलने के लिए क्लिक करें

यदि आप किसी कारण से चिह्न द्वारा संदेश नहीं भेज पाए तो निम्न मोबाइल नम्बर के वाट्सऐप द्वारा अपना संदेश भेजें।

8610502230 (केवल संदेश हेतु)

(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

भारतीय परम्परा मासिक ई-पत्रिका

के पुराने अंक को देखने के लिए किताब पर क्लिक करें !!

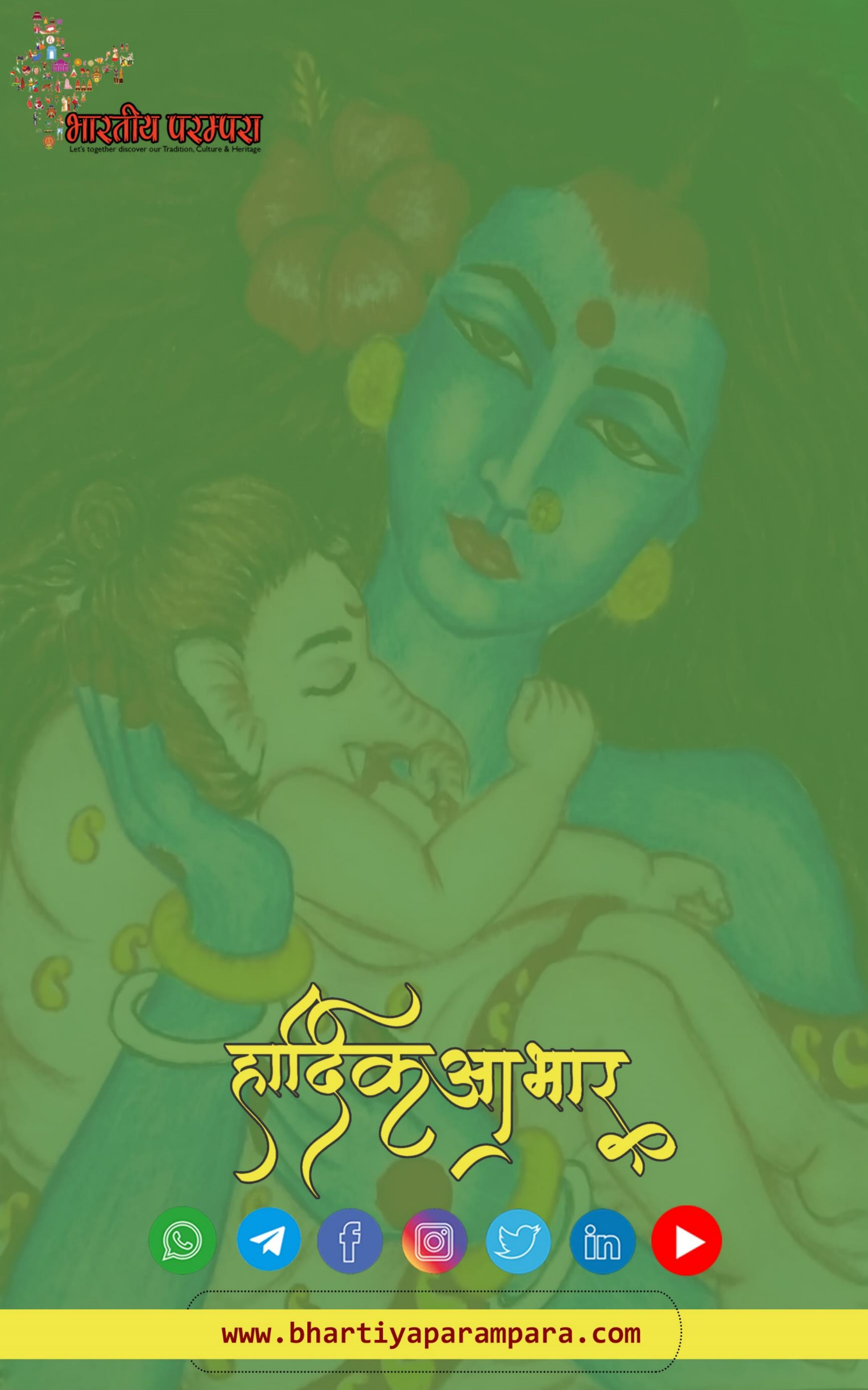
भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
हार्दिक आभार
www.bhartiyaparampara.com